कलीसिया परिशिष्ट 10

[कलीसिया निर्माण की सेवकाई]
सलाह देने के लिए तथ्यों को एकत्रित करना

परिचय। एक मसीही को दूसरों को सलाह देने से पहले अवलोकन करना, सुनना और प्रश्न पूछना सीखना चाहिए। पर्याप्त मात्रा में जानकारी हासिल करने के बाद ही, वह दूसरों को अच्छी सलाह दे सकता और दूसरों की सही निर्णय लेने में मदद कर सकता है।

नीतिवचन की पुस्तक में अवलोकन करने, सुनने और प्रश्न पूछने के लिए निम्नलिखित अच्छी शिक्षाएं प्रदान की गयी हैं:

1. लोगों का अवलोकन करना सीखें।

खोजें व चर्चा करें। अवलोकन करने वाली बातें कैसे आपकी जानकारियां हासिल करने तथा दूसरों को सलाह देने में मदद कर सकती हैं?

(1) लोगों की जीवन शैली और उनके व्यवहार का मूल्यांकन करें।

पढ़ें नीतिवचन 24:30-34 तक। वहां लिखा है कि,"मैं आलसी के खेत के पास से और निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की बारी के पास से होकर जाता था, तो क्या देखा कि, वहां सब कहीं कटीले पेड़ भर गए हैं; और वह बिच्छू पेड़ों से ढंप गयी है, और उसके पत्थर का बाड़ा गिर गया है। तब मैं ने देखा और उस पर ध्यान पूर्वक विचार किया; हो मैंने देखकर शिक्षा प्राप्त की। छोटी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ी देर हाथ पर हाथ रख के और लेटे रहना, तब तेरा कंगालपन डाकू की नाई और तेरी घटी हथियार बन्द के समान आ पड़ेगी। लोगों की जिन्दगियों से शिक्षा से प्राप्त करने के लिए आपको यह निरीक्षण या मूल्यांकन करना जरूरी है कि वे कैसे जीवन व्यतीत करते हैं। उदारहण के लिए, एक आलसी व्यक्ति के जीवन पर ध्यान करके आप सीख या समझ सकते हैं कि वह कंगाल कैसे होता है।

(2) लोगों की सुखद अवस्था पर अवलोकन करना।

पढ़ें नीतिवचन 27:23। वहां पर लिखा है, "अपनी भेड़ बकरियों की दशा भली-भांति मन लगाकर जान ले, और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देखभाल उचित रीति से कर"। जितने भी मसीही आपके हाथों में सौंपे गये हैं आपको ध्यानपूर्वक उनकी शारीरिक,भावनात्मक, सामाजिक और आत्मिक स्थिति का अवलोकन करना चाहिए। आपको अपने आप से कुछ निम्नलिखित प्रश्न करने चाहिए:

- "नियमित तौर पर चलने वाली बीमारी दूसरे मसीही व उसके परिवार को प्रभावित कर रही है?"
- "उस व्यक्ति को भावनात्मक आघात क्यों लगा?"
- "लोगों के लिए उससे सम्बन्ध बनाया क्यों मुश्किल है?"
- "वह कलीसियाओं की सभाओं से दूर क्यों रहता है?"

आपके हाथों में सौंपे गये मसीहियों की स्थिति का सही अवलोकन करने पर आप उन्हें बेहतर सलाह देने और उनकी सहायता करने में सक्षम बन जाते हैं।

(3) लोगों की नि:शब्द बातों को अवलोकन करें।

पढ़ें मरकुस 3:4-5।

नि:शब्द बातों का मलतब बिना कुछ कहे अपनी क्रियाओं और अपने भावों के द्वारा अपनी बात व्यक्त करना।

- व्यक्ति के चेहरे के हाव भाव पर ध्यान दें। लोग अलग अलग परिस्थितियों में अलग अलग प्रकार के भाव प्रगट करते हैं। वे गुस्सा, नफरत, जिद, विरोध, भय, चिन्ता, हैरानी, असुरक्षा, उदासी, तनाव, असहमती, अचम्भा और आनन्द इत्यादि प्रगट करते हैं।
- हाथों, कन्धों और पैरों की हरकतों पर ध्यान दें।
- ध्यान दें कि वह कैसे बैठता,खड़ा होता या चलता है?
- भिन्न परिस्थितियों में वह कैसी क्रिया या प्रतिक्रिया प्रगट करता है?
- उसके आवाज के लहज़े पर गौर करें। लहज़ा भिन्न विचारों,भावनाओं और स्वभाव को प्रगट करता है।
- हो सकता है कि उस व्यक्ति ने बात करते समय अपनी आंखों को ज़मीन की ओर झुकाया हो या दाये से बायें घुमाया हो।
- कन्धो के द्वारा नज़रअन्दाज किये जाने को पहिचाना जा सकता है।
- हाथों के द्वारा हम धबराहट या प्रबलता को जान सकते हैं।
- कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका शरीर किसी हैंगर टंगा हो।
- कई बार आप डर, चिन्ता या घबराहट के मारे निकलने वाले पसीने की दुर्गन्ध को महसूस कर सकते हैं।
- उसके व्यवहार में उदासीनता, लापरवाहीं, उतावलापन, अनिच्छा, या चिन्ता प्रगट होती है।
- उसके काम या काम का अभाव उसकी स्वीकृति या अस्वीकृति को प्रगट कर देते हैं।

नि:शब्द बातचीत का अवलोकन करने का उद्देश्य। ध्यान दें कि आप किसी पर दोष लगाने के लिए निशब्द बातचीत का प्रयोग नहीं कर सकते। *उसकी नि:शब्द बातचीत के प्रति आपके विचारों या सोच को निर्णायक तौर पर ठीक नहीं माना जा सकता है।* आपके अपने विचार या सोच से केवल आपको यह पता करने के लिए सही प्रश्न पूछने में सहायता मिलती है कि वास्तव में उस व्यक्ति के मन में वैसी भावनाएं और सोच है कि नहीं।

नि:शब्द बातचीत प्रयोग करने का उद्देश्य। ध्यान दें कि आपकी नि:शब्द बात दूसरे व्यक्ति को दुविधा में न डाल दे या उसे असुरक्षित न बना दे। इसकी बजाय उस व्यक्ति को आपसे खुलकर बातचीत करने में सहायता और प्रोत्साहन मिलना चाहिए। आपके चेहरे की सैंकड़ों मांसपेशिया, घमण्ड,पूर्वधारणा, अस्वीकृति,नापसन्दी इत्यादि को दिखाा सकते हैं। इसलिए आपको अपनी बात को रखने के लिए कभी नि:शब्द भाषा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

2. लोगों की बात सुनना सीखें।

खोजें व चर्चा करें। सुनी हुई बातें किस प्रकार से आपकी जानकारियों को इकट्ठा करने और दूसरों को सलाह देने में मदद कर सकती हैं?

(1) बात को समझने के लिए ध्यान से सुने।

नीतिवचन 13:15; 27:25। वहां पर लिखा है,"सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है"। जितना हम सुनते हैं उतना ही हम समझते हैं। जितना ज्यादा आप सुनते हैं, उतना ही ज्यादा दूसरे व्यक्ति को यह आभास होता है कि आप उसकी पूरी बात को सुनने के इच्छुक हैं। जितना ज्यादा आप उसके सुनते हैं उतना ज़्यादा उस व्यक्ति को यह पता चलता है कि आप उसकी बातों को गम्भीरता से ले रहे हैं,उसे समझ रहे हैं और उसे स्वीकार कर रहे हैं।

किसी की बात को सुनने और उसकी बात को समझने या उस बात की तह में छुपी समस्यों को पहचानने में बहुत अन्तर होता है। एक जन अपनी समस्याओं को छुपाने के लिए शब्दों का जाल बुन सकता है,क्योंकि वह डरा हुआ होता है या फिर उसके इरादे गुप्त होते हैं। आपके सुनने का मकसद दूसरे जन की परिस्थितियों या उसकी समस्याओं को समझना है।

(2) बोलने से पहले सुनें।

पढ़ें नीतिवचन 18:13,15 में लिखा है,"जो बिना बात सुने उत्तर देता है, वह मूर्ख ठहरता और उसका अनादर होता है। समझ वाले का मन ज्ञान प्राप्त करता है; और बुद्धिमान ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं।" किसी की बात को पूरी तरह सुने बिना, न तो आप बात करें और न ही किसी को कोई सलाह दें। सबसे पहले सुने कि दूसरा व्यक्ति क्या कह रहा है, उस मुद्दे के हर पहलू को समझें और उसके जीवन के बारे में प्रकाशन प्राप्त करें। आप कुछ कहने से पहले उसकी बात को सुनें।

(3) मुकद्दमें के दोनों पक्षों की बात सुनें

पढ़ें नीतिवचन 18:17। वहां लिखा है, "मुकद्दमें में जो पहले बोलता, वही सच्चा जान पड़ता है, परन्तु बाद में दूसरे पक्ष वाला आकर उसे जाचं लेता है। " अगर दो लोगों को बीच कोई झगड़ा हो गया है तो किसी एक ही पक्ष की बात को सुनना मूर्खता है। हो सकता है कि उसकी बताई कहानी सच्ची न हो या मनगढ़ंत या बढ़ाचढ़ाकर बताई गयी बात हो। जिस तरीके से वह घटित घटना का वर्णन करेगा वह झगड़े में शामिल दूसरे पक्ष के लिए बिल्कुल अनुचित होगा। लेकिन जब आप दूसरे पक्ष की बातों को सुनेगें,तो आपको अधिक जानकारी हासिल होगी, आपको बात ठीक ढंग से समझ आएगी और आप उन्हें उचित सलाह प्रदान कर पाएंगे। इसलिए आपको सलाह देने से पहले दोनों पक्षों की बात सुनना ज़रूरी है।

(4) सुनें ज़रूर, लेकिन सुनी हुई हर बात पर विश्वास न करें।

पढ़ें नीतिवचन 14:15। वहां लिखा है, "भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझबूझकर चलता है।" जब झगड़े होते हैं तो दोनो पक्ष एक दूसरे की बुराई या चुगली करते हैं। इसलिए केवल सुनी हुई बातों या अवलोकन की हुई बातों को सत्य मान लेना एक भूल है। आपको लोगों की बुराईयों या चुगलियों पर कान नहीं लगाना चाहिए वरन झगड़े में शामिल लोगों से बात करनी व उनकी सुनकर यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि वास्तव में समस्या क्या है।

कुछ ही तथ्यों के आधार पर दूसरे व्यक्ति के मकसद को अपनी धारणा बना लेना भी एक मूर्खता है। आपको पर्याप्त मात्रा में सुनना, मूल्यांकन करना और प्रश्न करना ज़रूरी है, ताकि आप किसी को भी सलाह देने से पहले अधिक से अधिक तथ्यों व जानकारियों को हासिल कर सकें।

3. प्रश्न पूछना सीखें।

परिचय। कई बार लोगों को अपने विचारों, योजनाओं और दु:खद अनुभवों को साझा करने में काफी तकलीफ होती है। इसलिए मसीहियों के लिए यह सीखना बहुत जरूरी है कि वे उचित प्रश्न पूछना सीखें जिससे उस व्यक्ति को अपने दिल की बात सामने रखने में आसानी हो सके।

खोजें व चर्चा करें। आप प्रश्न किस तरह से जानकारी हासिल करने और सलाह देने में आपकी सहायता कर सकते है?

ध्यान दें।

(1) अधिक जानकारी हासिल करने के लिए प्रश्न पूछें।

पढ़ें नीतिवचन 25:2। वहां पर लिखा है, "राजाओं की महिमा गुप्त बात का पता लगाने से होती है"। आप तब तक प्रश्न पूछते रहें जब तक कि आपको एक सिद्ध सलाह देने लायक तथ्या व जानकारियां हासिल न हो जाएं।

(2) कुटिलता का पर्दाफाश करने के लिए प्रश्न के बदले प्रश्न पूछें।

पढ़ें मत्ती 21:24। यीशु ने उत्तर दिया, "मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ, यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हे बताऊंगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ..." कई बार सबसे अच्छा तरीका किसी के प्रश्न के बदले में प्रश्न पूछना होता है। यीशु मसीह ने फरीसियों के प्रश्न का उत्तर उनसे उलटा एक प्रश्न पूछकर दिया, क्योंकि वे यीशु को उसकी ही बातों के द्वारा दोषी ठहराना चाहते थे। वह उनके मन की बातों व विचारों को जानता था और उसने अपने विरूद्ध बिछाये जाल से बचने के लिए स्वयं ऐसा जाल तैयार कि वे खुद ही उस जाल में फंस जाएं। उसने उन्हें उसके प्रश्न का उत्तर देने पर मज़बूर किया ताकि उनकी कुटिलता सबके सामने प्रगट हो जाए।

(3) लोगों की सोचने में सहायता करने के लिए प्रश्न पूछें।

पढ़ें लूका 10:26-28। यीशु ने कहा,"बाइबल में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?" हम ज्यादातर लोगों की सोचने में मदद करने की बजाय उन्हें अपनी सलाह या सुझाव देने लग जाते हैं। यीशु ने लोगों के सम्मुख यह चुनौति रखी कि वे बाइबल पढ़कर स्वयं सत्य या उत्तरों की खोज करें। उसने उनके सामने बाइबल पढ़ने, अपने आप सोचने और अपने आप बाइबल में से जवाब ढूढ़कर एक नतीजे तक पहुंचने की चुनौति रखी। परमेश्वर का वचन आपकी सलाह से ज्यादा दूसरों का कायल करता है। अपने आप खोजी गयी सच्चाई को बेहतर ढंग से समझा और याद रखा जाता है।

4. बाइबल पढ़ने और उसका अध्ययन के द्वारा बुद्धि प्राप्त करना सीखें।

सिखाएं। बाइबल परमेश्वर की महानता और परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन के बारे में क्या सिखाती है?
एक मसीही विश्वास करता है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है और परमेश्वर के पास अपनी सृष्टि, उसके लोगों और उसमें घटने वाली घटनाओं के लिए एक योजना है। लेकिन परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी जगत की और मानवजाति के इतिहास की सम्पूर्ण योजना को मनुष्य पर प्रगट नहीं किया है। यशायाह 55:9 में लिखा है,"क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति मे और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।" बहुत सी ऐसी चीज़ें है जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्यों पर प्रगट नहीं किया है और वह न ही उनको प्रगट करेगा। सामान्य तौर पर, परमेश्वर हम पर यह व्यक्त नहीं करते कि हमारे भविष्य में क्या होने वाला है। लेकिन हमें उन अनजान परिस्थितियों से घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि जितने लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं(रोमियों 8:28)। परमेश्वर अपनी शक्ति और अपने प्रेम दोनों में महान है।

जिन बातों को वह लोगों के लिए जरूरी समझता है उन्हें, परमेश्वर ने पहले ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं, यीशु मसीह और नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट कर दिया है। व्यवस्थाविवरण 29:29 में लिखा है, "गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिए हमारे और हमारे वंश में रहेंगी, इसलिए कि इस व्यवस्था की सारी बातें पूरी हो जाएं। परमेश्वर की प्रगट इच्छा में विशेष शिक्षाएं और सामान्य शिक्षाएं शामिल होती हैं।

5. सलाह देना सीखें।

सिखाएं। सलाह देने का अर्थ दूसरों को ऐसी जानकारी या तथ्य प्राप्त करने में सहायता करना है जिससे उस व्यक्ति को स्वयं अपने निर्णय लेने में सहायता मिल सके।

दूसरे व्यक्ति को सक्रिय चर्चा के सम्बन्धित सत्यों और बाइबल में लिखे सिद्धान्तो को समझने में सहायता मिल सके। दूसरे व्यक्ति की यह भी समझने में सहायता करें कि इस निर्णय में कौन कौन सी मुद्दे शामिल हैं। दूसरे व्यक्ति की दो अलग अलग निर्णयों के परिणामों पर गौर करने में सहायता करें: "यदि आप पहले विकल्प को चुनते हैं तो उसका सम्भावित परिणाम क्या होगा।" "यदि आप दूसरे को चुनते हैं तो उसका सम्भावित परिणाम क्या होगा?"

सलाह देने का अर्थ यह नहीं है कि आप लोगों को वहीं बताएं जो *आप* स्वयं उस परिस्थिति में करते। इसलिए कभी यह न कहें," कि अगर मैं इस जगह होता तो, यह या वह करता।" कभी उन्हें यह न बताएं कि आपका चुनाव या निर्णय क्या होता! क्योंकि आप एक अगुवे हैं, और जैसे ही उन्हें आपका चुनाव पता चलेगा वे केवल आपका ही अनुसरण करेगें। लेकिन उनके लिए आपका सुझाव परमेश्वर की इच्छा नहीं भी हो सकती है। और सकता है कि आपका निर्णय उन व्यक्ति के लिए परमेश्वर का निर्णय न हो! सलाह प्राप्त करने वाले व्यक्ति को अन्त में लिये गये निर्णयों के परिणामों की पूरी जिम्मेदारी लेना चाहिए। नहीं तो, अगर उसके साथ कुछ भी गलत हुआ तो वह *आप* पर "गलत" सलाह देने का दोष लगा देगा!

सलाह देने का अर्थ है कि आप पूरी तरह स्वीकार करते हैं कि अन्तिम निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी पूरी तरह सिर्फ प्रार्थी की है और निर्णायक तौर पर प्राथी करने का मार्गदर्शन करने का पूरा अधिकार सिर्फ परमेश्वर को है। अच्छी सलाह देना और तथ्यों व उनके परिणामों पर विचार करने में सहायता करना आपकी ज़िम्मेदारी है, लेकिन चुनाव करना या निर्णय लेना पूरी तरह से उसकी ज़िम्मेदारी है। यदि वह आपके निर्णयों से अलग चुनाव करता या निर्णय लेता है तब भी, आपको उसे परमेश्वर के अधिकार में होकर अपने भाई की तरह स्वीकार करना है।